सम्पादकीय
जीवन साधना का अनिवार्य चरण है जाग्रत् संवेदनाओं से उपजी सेवा-साधना 2

न्यू जर्सी में श्रावणी सोमवार को रुद्राभिषेक, हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया 6

कुरुक्षेत्र में धर्म सम्मेलन
सनातन संस्कृति की आत्मा कभी नष्ट नहीं हो सकती। - आद. डॉ. चिन्मय जी 7

गायत्री परिवार द्वारा निकाली जा रही हैं राष्ट्रव्यापी ज्योति कलश रथ यात्राएँ 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अक्टूबर 2024

वर्ष : 37, अंक : 07
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 सितम्बर 2024
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

जीवन साधना का उद्देश्य है अपनी कमजोरियों पर विजय, बंधनमुक्ति

युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य (अखण्ड ज्योति, अक्टूबर सन् 1977 से संकलित)

जीवन का यक्ष प्रश्न

महामनीषी टॉल्स्टॉय जब जीवन के अन्तिम दिनों में साहित्य से विराग लेकर धार्मिकता की गोद में, ईश्वर-चिन्तन में अपने को लीन कर देने के लिए लालायित हो रहे थे, तब उनके अभिन्न मित्र तुर्गनेव ने एक पत्र लिखकर यह अनुरोध किया था, ''ओ सरस्वती साधक! मेरी अन्तिम इच्छा यह है कि आप अपनी परिपक्व प्रतिभा के निर्णायक वर्ष धार्मिकता में बर्बाद न करें, क्योंकि यह वर्तमान दुनिया के लिए निरर्थक एवं अनुपयोगी है। मेरी बार-बार प्रार्थना है कि आप पुनः साहित्य के क्षेत्र में लौट आयें। टॉल्स्टॉय ने उनकी विनती सुनी हो या न सुनी हो, परन्तु इसका उत्तर सुनने से पहले ही तुर्गनेव इस संसार से कूच कर गये थे।

टॉल्स्टॉय ने इसका उत्तर देना भी उचित नहीं समझा, क्योंकि किसी दम्भ या आवेश से प्रेरित होकर वह ईश्वर-चिन्तन की ओर नहीं झुके थे। संसार के ऐन्द्रिय भोगों को जितना उन्होंने भोगा, शायद ही किसी दूसरे को वह सौभाग्य मिला हो। आत्म-विश्वस्त और निश्चिन्तता का जीवन व्यतीत करने वाले उस लेखक को कौन-सा ऐसा आघात लगा, जिसने उनके जीवन की दिशा को ईश्वर-चिन्तन की ओर मोड़ दिया। अब तक वह 'जीवन का क्या उद्देश्य है?' इस प्रश्न को नहीं समझ सके थे।

शॉपन हॉवर, प्लेटो, कान्ट और पास्कल के दार्शनिक सिद्धान्त भी उनके इन प्रश्नों का उत्तर न दे सके कि ''मैं क्यों जी रहा हूँ?'', ''मुझे कैसे जीवित रहना चाहिए?'' अन्त में महात्मा टॉल्स्टॉय ने भगवान से प्रार्थना की थी, ''हे ईश्वर! मुझे धर्म प्रदान करो और मुझे शक्ति दो, ताकि मैं दूसरे लोगों को भी सुख-शान्तिमय जीवन व्यतीत करने में सहायता कर सकूँ?''

क्या ईश्वरीय शक्ति को ग्रहण करने की क्षमता हमारे अन्दर है? यदि वह शक्ति हमारे अन्दर पहले से ही विद्यमान है तो उसका स्वरूप क्या है? आदि प्रश्नों के उत्तर पाने की जिज्ञासा न केवल महात्मा टॉल्स्टॉय के अन्दर उत्पन्न हुई, वरन् संसार के दूसरे विचारकों ने भी उसे अपनी-अपनी तरह से सोचा, परन्तु उस चिन्तन का व्यावहारिक उपयोग न होने के कारण वह युगधर्म न बन सका।

जीवन की संरचना

जीव के अन्दर ईश्वरीय अनुदान ग्रहण करने की क्षमता उसकी आत्मा में है। आत्मा इस शरीर रूपी रथ का रथी है। जिस प्रकार रथ को चलाने के लिए अश्वों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमारी पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ; कुल दस इस शरीर रूपी रथ के घोड़े हैं। विद्या और कर्म ये दोनों इस रथ के पहिये हैं; क्योंकि संसार में आत्मा की जो कुछ गति हमें दिखाई देती है वह सब कर्म के द्वारा ही सम्भव है। जीना, मरना, सन्तान उत्पन्न करना, खाना-पीना आदि कर्म आत्मा के बहिरंग स्वरूप को व्यक्त करते हैं। सद्विचारों से आत्मा को बल प्राप्त होता है तथा कुविचारों एवं कुकर्मों से उसकी शक्ति का ह्रास होता है।

'आत्मा की ज्योति' के सम्बन्ध में योगीराज अरविन्द के निम्न विचार दृष्टव्य हैं।

''सतर्कता, जागरूकता और चैतन्यता आत्मा की त्रिमुखी ज्योति है, जिसके प्रकाश में मानव जीवन का लक्ष्य दृष्टिगोचर होता है। आत्मा की त्रिमूर्तिमयी ज्योति को जाग्रत् करने वाला अनायास ही परमात्मा का साक्षात्कार कर लेता है। इसके विपरीत संशय, अविश्वास और अंध विश्वास मानव-मन की त्रिया तमसा है, जिसकी उपस्थिति में ठीक मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति भी पथ-भ्रान्त होकर अपने लक्ष्य से दूर जा पड़ता है।''

बंधनों की कारा तोड़ो

संसार के समस्त दुःखों की जड़ 'बंधन' हैं और यह बंधन मायाजन्य हैं। जिस प्रकार बँधा हुआ पानी अपनी गतिशीलता खो बैठता है और दुर्गन्ध से युक्त हो जाता है, उसी तरह **संसार के प्रलोभनों में बँधा हुआ मनुष्य जड़ और शक्तिहीन हो जाता है। उसके लिए बाह्य बंधन उतने घातक नहीं हैं, जितने कि आंतरिक बंधन। व्यक्ति स्वयं अपने को न बाँधे तो किसी में भी इसे बाँध कर रख सकने की क्षमता नहीं है, क्योंकि जीवन चैतन्य स्वरूप है और उसके सारे बंधन जड़ हैं। जड़ चैतन्य को बाँध ही कैसे सकता है? जब तक वह स्वयं अपने को न बाँधे।**

मनुष्य स्वयं ही ममता, अज्ञान, अहंकार या भयवश अपने को बाँध लेता है। फलस्वरूप सांसारिक कष्टों से ऊबकर वह फिर मृत्यु की याचना करता हुआ देखा जाता है। जीवन का अर्थ या जीने की कला का सम्यक ज्ञान न होने से ही उसे यह सब दुःखद अनुभव होने लगते हैं।

इस बंधन से मुक्ति प्राप्त करना जब मनुष्य का लक्ष्य बन जाता है, तब उसे सभी कुछ बेकार और निरर्थक लगने लगता है। झूठे ममत्व का मोह इस प्रकार विलुप्त होने लगता है; जिस प्रकार सूर्य के निकलने पर अन्धकार।

पूर्णता प्राप्त करने वाले साधक को सभी बंधन तोड़ देने चाहिए। उसे न किसी जाति का मोह, न परिवार का मोह, न किसी संघ या संस्था का मोह अपने मार्ग से विचलित कर सकता है। यदि वह किसी व्यक्ति विशेष के साथ अपना अविवेकपूर्ण लगाव अधिक रखता है, तो यह उसका हृदय-दौर्बल्य ही कहा जायेगा। उसके लिए तो प्राणीमात्र समान हैं। सभी के अन्दर एक ही ब्रह्मशक्ति का वास होने के कारण न कोई उसके लिए छोटा है और न बड़ा। ''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पंडितः।'' के आधार पर तो जीव विश्वमानव की एक इकाई बनकर रह जाता है। ऐसा व्यक्ति समस्त विश्व के कल्याण के लिए अपने को बलिदान करके ही चैन की साँस लेता है। यदि उसकी यह कामना इस जीवन में पूरी न हुई, तो चाहे इसके लिए अनेक जन्म धारण करने पड़ें, उसकी लगन और कार्यनिष्ठा में कोई कमी नहीं आ सकती है। इस प्रकार की तपस्या का नाम ही 'अध्यात्म' है। जो किसी के साथ छल नहीं करता, प्राणीमात्र के साथ समान व्यवहार करता है, वही वास्तव में आत्मा के सच्चे स्वरूप को पहचान लेता है और ''मैं क्यों जीवित हूँ?'' इस प्रश्न का सही उत्तर प्राप्त कर लेता है।

संकल्प का बल

उपर्युक्त भावना को बलवती बनाने के लिए व्यक्ति के पास दृढ़ संकल्प-शक्ति का होना अनिवार्य है। संकल्प-शक्ति में समाहित बल का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। संकल्प के बल पर ही भगवान ने इस सृष्टि की रचना की है, ऐसा हमारे आर्ष ग्रन्थों में उल्लेख है।

तृष्णा, वासना की ओर निशि-दिन दौड़ लगाने वाले मन पर विवेकबुद्धि से अनुशासन बनाये रखने से ही जीवन की अधिकांश समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। अपने ऊपर स्वयं का जितना कठोर अनुशासन होगा, उतना ही श्रेष्ठ और विकसित जीवन बना रहेगा। मानसिक नियमन के उच्च सन्तुलन के द्वारा मनुष्य की शक्तियाँ संगठित हो जाती हैं। एकाग्रता अथवा 'तन्मयता' से उत्पन्न होने वाली शक्ति का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है। एकाग्रता का बल संयम, इन्द्रिय निग्रह और अपने ऊपर कठोर अनुशासन रखने से ही प्राप्त होता है।

मानसिक दुर्बलता और आंतरिक अस्त-व्यस्तता के कारण ही मन सदैव इधर-उधर दौड़ता रहता है। यदि हमारी इच्छाएँ, वासनाएँ विवेकबुद्धि के कठोर नियंत्रण में बनी रहें, तो निश्चय ही हमारी उन्नति होगी, अन्यथा शक्तियों के ह्रास होने पर जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

गुण ग्राहक एवं स्वाध्यायी बनें

जीने की कला सीखने के पहले हमें सद्गुण चिन्तनकारी एवं स्वाध्यायी बनना चाहिए। हमें अपने विचार दृढ़ बनाने चाहिए। ''मैं मन, वचन तथा कर्म से पवित्र हूँ। दूसरों के सुख-दुःख मेरे ही सुख-दुःख हैं। संसार की सभी दिशाओं से मुझे प्यार ही प्यार मिल रहा है।'' ऐसे विचार जब मन में दृढ़ होंगे, तब हमें संसार में कोई दूसरा दिखाई ही नहीं पड़ेगा और 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की ओर ले जाने में समर्थ होगी। यही है 'जीवन का अर्थ', जिसके लिए महात्मा टॉल्सटॉय का हृदय विक्षुब्ध हुआ था और उन्होंने साहित्य से विरत होकर ईश्वर-चिन्तन में ही आत्म-कल्याण करने की प्रेरणा प्राप्त की थी।

जीवन साधना का अनिवार्य चरण है जाग्रत् संवेदनाओं से उपजी सेवा-साधना

मानव में देवत्व के जागरण के साथ सहज भाव से उभरती है परदुःखकातरता एवं लोकमंगल की भावना

भक्ति का सच्चा स्वरूप

परम श्रद्धेया शैल जीजी अपने उद्‌बोधनों में भाव संवेदनाओं के प्रभाव को बताने के लिए एक कहानी अक्सर सुनाया करती हैं-दमिश्क के मोची अब्दुल बिन मुफिक की।

हज यात्रा समाप्त हो गई थी। तब एक दिव्य आत्मा ने एक पेड़ पर बैठे दो फरिश्तों को आपस में चर्चा करते सुना। वे कह रहे थे-हज करने आए तो लाखों लोग, किन्तु कुबूल केवल दमिश्क के मोची अब्दुल बिन मुफिक की हुई। मन में कौतूहल जागा कि पता लगाया जाए कि वह एकमात्र पुण्यात्मा कौन है, जिसका हज कुबूल हुआ है? खोजबीन करने पर पता चला कि मोची अब्दुल बिन मुफिक तो हज करने मक्का तक पहुँच ही नहीं पाया था।

वस्तुतः अब्दुल बिन मुफिक अत्यंत आस्थावान, लेकिन बहुत गरीब मोची था। उसने बड़ी मुश्किल से थोड़े-थोड़े पैसे जोड़कर उस वर्ष हज यात्रा की योजना बनाई थी, लेकिन तभी दमिश्क में भीषण अकाल पड़ गया। अब्दुल से लोगों की पीड़ा देखी नहीं गई। उसने अल्लाह से क्षमा माँगते हुए अपनी बरसों की इच्छा को दरकिनार कर जोड़ा हुआ सारा धन अकाल पीड़ितों की सेवा में खर्च कर दिया।

संत एकनाथ की विलक्षण भक्ति का उदाहरण भी बहुत दिया जाता है। वे भीषण गर्मी के दिनों में सैकड़ों अन्य तीर्थयात्रियों के साथ गोदावरी का जल लेकर भगवान रामेश्वरम का अभिषेक करने निकले थे। रास्ते में एक विचित्र घटना घटी। एक गधा प्यास से बुरी तरह तड़प रहा था। संत एकनाथ से देखा न गया। जो जल वे भगवान रामेश्वरम के अभिषेक के लिए ले जा रहे थे, वह पूरा जल तड़पते हुए गधे को पिला दिया।

कहते हैं, भगवान भोलेनाथ तीर्थयात्रियों की भक्ति की परीक्षा ले रहे थे। जल पीते ही गधा तिरोहित हो गया और साक्षात भगवान शिव संत एकनाथ के सामने प्रकट हो गए।

साधना से सिद्धि

भक्तिभाव यदि सात्विक हो, सच्चा हो तो भक्त और साधक के हृदय में ऐसी संवेदनाएँ उभरती ही हैं। यह संवेदनाएँ ही साधना की सिद्धि और मानव में देवत्व के जागरण की परिचायक हैं। हृदय में यदि लोकमंगल की भावना उठती हो, परदुःखकातरता का विकास हो रहा हो, तो समझना चाहिए कि साधना सफलता की ओर अग्रसर हो रही है। कहते हैं, भगवान भाव के भूखे होते हैं। बड़े-बड़े धर्मानुष्ठानों को करने के बावजूद यदि मन में भाव संवेदनाएँ जाग्रत् नहीं होतीं, तो साधक को आत्मसमीक्षा जरूर करनी चाहिए।

जब 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसी भावनाओं को हृदयंगम कर पूजा, पाठ, जप, तप, व्रत, अनुष्ठान किए जाते हैं, तब सहज भाव से आत्मचेतना का विस्तार होने लगता है। मनोकामनाओं की पूर्ति और स्वार्थ सिद्धि के लिए किए गए धर्मानुष्ठानों का भी अपना प्रभाव है, किन्तु तब मानव से महामानव, नर से नारायण की ओर अग्रसर होने की दिशा में अभीष्ट गति नहीं होती।

विगत 1 सितम्बर 2024 के अंक में परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी तथा अखण्ड ज्योति प्राकट्य के शताब्दी वर्ष के संदर्भ में सम्पादकीय आलेख प्रकाशित किया गया था। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के प्रति निष्ठावान प्रत्येक शिष्य, साधक से जन्मशताब्दी वर्ष-2026 में जाग्रत् भाव संवेदनाओं के अनुपान के साथ परम पूज्य गुरुदेव के 'विचार क्रान्ति अभियान' को प्रखर एवं प्रभावशाली बनाने का निवेदन उस आलेख में किया गया था। आवश्यकता है कि नवरात्र के विशेष पूजा, पाठ, जप, तप, व्रत, साधना अनुष्ठानों के साथ अपने व्यक्तित्व में भाव संवेदनाओं के विकास के लिए भी विशेष प्रयास और प्रयोगों का शुभारंभ किया जाए।

सर्वजन हिताय सामूहिक प्रयास हों

प्रायः सभी व्यक्ति सामूहिकता के प्रभाव से परिचित हैं। ब्लिट्ज़ के तत्कालीन संपादक श्री आर.के. करंजिया ने एक साक्षात्कार में अपना मत व्यक्त किया था कि भारत के सभी लोग एक साथ गायत्री महामंत्र का उच्चारण करें तो उससे जितनी ऊर्जा का उत्पादन होगा, वह परमाणु बम की ऊर्जा से भी अधिक होगी। श्रद्धेया जीजी बताती हैं कि उससे खरबों वॉट बिजली के बराबर ऊर्जा उत्पन्न होगी। जुलाई सन् 1979 में, जब दुनिया के वैज्ञानिक स्काय लैब के गिरने से बड़ी दुर्घटना की आशंका जता रहे थे, तब परम पूज्य गुरुदेव ने घोषणा की थी कि हम इसे सुरक्षित उतार लेंगे। इसके लिए उन्होंने 'यान सुरक्षा अनुष्ठान' सम्पन्न कराया था, जिसके अंतर्गत गायत्री परिवार के करोड़ों लोगों द्वारा गायत्री महामंत्र का सामूहिक जप किया गया था। इस अनुष्ठान का प्रभाव ही था कि स्काय लैब बिना किसी को नुकसान पहुँचाये समुद्र में गिरा।

आज पूरे विश्व में भारत को तोड़ने की न जाने कितनी साजिशें हो रही हैं। देश में जातिवाद का जहर घोला जा रहा है। विकास की राह में तरह-तरह के रोड़े अटकाए जा रहे हैं। पूरा विश्व युद्धोन्माद से पीड़ित, प्रभावित और परेशान है। ऐसे में हम सबको मिलकर इनके शमन और समाधान के लिए सामूहिक साधना और प्रार्थना के प्रयोग अवश्य करने चाहिए। शक्तिपीठ/शाखाओं में साधकों में इस भाव को विकसित करने के लिए तरह-तरह के प्रयास किए जा सकते हैं, बैनर लगाए जा सकते हैं, सामूहिक जप और प्रार्थनाओं के आयोजन हो सकते हैं।

सेवा का शुभारंभ

सेवा के अनन्त आयाम हैं। शुभारंभ चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, हर साधक को इस क्षेत्र में कदम अवश्य बढ़ाने चाहिए। राई के बराबर के बीज से नन्हा बीज अंकुर फूटता है और वह धीरे-धीरे वटवृक्ष बन जाता है। छोटी-छोटी अच्छी आदतें ही जीवन में महानता का पथ प्रशस्त करती हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने सदैव यही प्रेरणा दी है। अपने यज्ञों में हर साधक से अणुव्रत संकल्प कराया जाता है। सेवा भावना का विकास भी एक उच्च कोटि का संकल्प है, जिससे मानव में देवत्व का उदय और साधना की सफलता का पथ प्रशस्त होता है।

सकारात्मक चिंतन बढ़ायें : अपने चिंतन में सकारात्मकता को बढ़ाना व्यक्तित्व परिष्कार और लोकमंगल की बड़ी महत्त्वपूर्ण साधना और समाज की बड़ी सेवा है। हर व्यक्ति में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों होती हैं, व्यक्ति जो देखना चाहता है वही उसे दिखाई देता है। बुरे से बुरे व्यक्ति में भी अगर अच्छाइयाँ तलाश की जायें तो अच्छाइयाँ मिल जायेंगी। एक राही रास्ते के कंकड़-पत्थरों से, पर्वत-खाइयों से और कंटीले झाड़-झंखाड़ों से बचकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ता रह सकता है तो कोई कारण नहीं कि जिनके चिंतन, चरित्र और व्यवहार से प्रसन्नता नहीं होती, अच्छी सोच और सकारात्मक चिंतन के साथ उनसे बचकर श्रेष्ठता के मार्ग पर न बढ़ा जा सके। यदि अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाना है तो द्वेष, दुर्भावना, अहंकार जैसी अवांछनीयताओं को दरकिनार कर विनम्रता एवं सद्‌भावना को अपनाते हुए आगे बढ़ना ही होगा।

घर से करें शुभारंभ : अपने जीवन में सेवाभावना का समावेश घर से ही किया जा सकता है। परिवारी जनों का हाथ बँटाते हुए भी व्यक्तित्व में आमूलचूल परिवर्तन का शुभारंभ हो सकता है। भोजन के पश्चात् अपने-अपने बर्तन स्वयं साफ करने की आदत डालें। बच्चों को पढ़ाने और संस्कारवान बनाने के लिए कुछ समय निकालें। घर के बुजुर्गों के साथ समय बिताना, महिलाओं का सम्मान और उनका सहयोग करना जैसी बातें छोटी दिखती हैं, पर व्यक्तित्व परिष्कार की दृष्टि से इनका प्रभाव उच्च कोटि का होता है। यह व्यक्ति के स्वभाव को बदल देती हैं।

अस्वच्छता निवारण : स्वच्छता और सुंदरता की भावना व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक एक अत्यंत प्रभावशाली दैवी गुण है। यह स्वास्थ्य रक्षा के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। अपने मिशन में अस्वच्छता निवारण के लिए सामूहिक श्रमदान की परंपरा अपनाई जाती है। प्रत्येक परिजन को अपने घर, द्वार और अड़ोस-पड़ोस की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। छोटे-छोटे समूहों में नित्य, नियमित स्वच्छता–श्रमदान की व्यवस्था बनाई जा सकती है।

बाल/किशोर संस्कार शालाएँ : देश को सद्‌गुणी, संस्कारवान पीढ़ी सौंपना समाज की बहुत बड़ी सेवा है। आज के समय में विद्यालय पुस्तकीय ज्ञान और डिग्रियाँ देने तक सीमित हो गए हैं। नैतिक मूल्यों के ह्रास से बच्चों में उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता बढ़ रही है। बच्चे नशेबाजी जैसे अवगुणों का शिकार हो रहे हैं। तरुणाई खोखली होती चली जा रही है। बच्चों का जीवन बर्बाद तो हो ही रहा है, पूरा समाज और राष्ट्र इसके दुष्परिणाम भुगतने को विवश है। बाल संस्कार शालाएँ इनका प्रभावशाली समाधान हैं।

पिछड़ों के उत्थान के लिए : इन दिनों अगड़ी–पिछड़ी जातियों के हितों की बातें खूब हो रही हैं। ध्यान रहे कि जो पिछड़े हैं, उन्हें प्यार, सम्मान, संस्कार देकर ही समाज की मुख्य धारा में लाया जा सकता है। उनके भीतर की आत्महीनता और समाज की उपेक्षा को दूर करने के लिए इस वर्ग की सेवा करने की आवश्यकता है। बाल संस्कार शालाओं तथा कन्या/किशोर संस्कार शालाओं को इस पवित्र कार्य की बुनियाद कहा जा सकता है। हर गाँव, गली–मोहल्ले में ऐसी संस्कार शालाओं की आवश्यकता है। सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं के संगठन–सहयोग से हर क्षेत्र में ऐसी संस्कार शालाओं का विस्तार किया जा सकता है।

बुजुर्गों की सेवा : वर्तमान एकल परिवारों की जीवन शैली का एक बड़ा ही खतरनाक पक्ष है बुजुर्गों की उपेक्षा। इससे परिवार को बाँधकर रखने वाले तार बिखर रहे हैं, परस्पर की दूरियाँ बढ़ रही हैं। वृद्धाश्रमों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। लोग बड़ी निर्दयता से अपने बूढ़े माँ–बाप को एकाकी और कष्टसाध्य जीवन जीने के लिए इन वृद्धाश्रमों में छोड़कर चले जाते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि कुछ ही वर्षों में उन्हें भी इसी अवस्था से गुजरना है।

घर या वृद्धाश्रमों में रह रहे बुजुर्गों के साथ आत्मीयता संवर्धन, उनकी सेवा अत्यंत पुण्यदायी कार्य है। गायत्री परिवार की अनेक शाखाएँ समय–समय पर यह कार्य कर रही हैं। बुजुर्गों की सेवा को हमें अपने स्वभाव का अंग बना लेना चाहिए। अपने आसपास के वृद्धाश्रमों में जाकर कुछ समय बुजुर्गों के साथ बितायें, उनके साथ सहभोज करें, उनका दुःख–दर्द सुनें और संभव हो तो उन्हें दूर करें। यह कार्य बुजुर्गों को तो सुकून देगा ही, उनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन और उनके आशीर्वाद हमारे लिए भी अत्यंत सुख संतोष और प्रेरणा देने वाले होंगे।

अस्पतालों में सेवा : भोपाल और उत्तर प्रदेश की लखीमपुर खीरी जैसी गायत्री परिवार की अनेक शाखाओं के युवा कई वर्षों से अस्पतालों में भोजन सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। अस्पतालों में दूर–दूर से मरीज आते हैं। उनके भोजन आदि की व्यवस्था तो अस्पताल की ओर से हो जाती है, लेकिन गरीब मरीजों के साथ आए परिचारकों को काफी परेशानी झेलनी पड़ती है। उपरोक्त शाखाएँ प्रतिदिन अस्पतालों में पहुँचकर सैकड़ों मरीजों और उनके परिचारकों को निःशुल्क भोजन कराती हैं।

> **कम से कम इतना तो करें**
>
> **पाँच परिवारों को मिशन से जोड़ें**
>
> किसी भी व्यक्ति में सेवाभावना का विकास क्रमशः ही होता है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की देव परिवारों के निर्माण की योजना भी **उच्चस्तरीय सेवा–साधना है** और पाक्षिक प्रज्ञा अभियान इस कार्य की सिद्धि हेतु जनसंपर्क के नए–नए द्वार खोलने का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है।
>
> आत्मीयता विस्तार के लिए कम से कम पाँच परिवारों में अपनी या अपनी शाखा की ओर से नियमित रूप से प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प लीजिए। यह परिवार आपके पड़ोसी, मित्र, दुकानदार, डॉक्टर, अधिकारी कोई भी हो सकते हैं। उन घरों में आत्मीयता विस्तार के लिए कुछ समय भी दीजिए। उनकी कुशलक्षेम पूछिये, कष्ट, परेशानी एवं समस्याओं के समाधान सुझाइये, मिशन की गतिविधियों की जानकारी दीजिए। उन्हें जीवन साधना और रचनात्मक कार्यक्रमों से जुड़ने की प्रेरणा दीजिए।
>
> गायत्री परिवार का समग्र अभियान सत्प्रवृत्ति संवर्धन, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन ही है। मेल–मिलाप बढ़ेगा, परस्पर चर्चा होगी तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आत्मिक प्रगति एवं मिशन के विस्तार के नित नये द्वार खुलते जा रहे हैं।

ध्यान रहे, दवाओं से कहीं ज्यादा असर दुआओं का होता है। मरीजों में फल, बिस्किट आदि वितरण के साथ उनके स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की जा सकती है। गायत्री मंत्र से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

सुधारात्मक प्रयास हों : विगत कुछ वर्षों से कुछ राज्यों में गायत्री परिवार द्वारा बंदियों के सुधार के लिए विविध कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिनके बहुत ही अच्छे परिणाम देखे गए हैं। इन कार्यक्रमों से बंदियों में हो रहे परिवर्तन की प्रशंसा प्रशासन भी करता है।

बाल सुधार गृह और नारी निकेतनों में भी इसी प्रकार के सुधारात्मक प्रयास किये जा सकते हैं। वहाँ यज्ञ, स्वाध्याय जैसे व्यक्तित्व परिष्कार परक कार्यक्रम चलें तो बच्चों और महिलाओं के मन से आत्महीनता मिटेगी, सन्मार्ग पर चलने का उत्साह जागेगा।

सेवा के अनंत आयाम हैं, आवश्यकता है उस पथ पर चल पड़ते हुए आत्मविकास और लोकमंगल की दिशा में सार्थक पहल करने की।

माता भगवती देवी स्मृति उपवन में वृक्षारोपण

750 वृक्षों की पौध रोपी

वृक्ष मैदानी नदियों के ग्लेशियर हैं। वृक्ष नहीं रहेगें तो पानी भी नहीं बचेगा –श्री मनोज तिवारी

खामखेड़ा, खरगोन। मध्य प्रदेश

कसरावद तहसील के ग्राम खामखेड़ा में माता भगवती देवी स्मृति उपवन में 24 त्रिवेणियों सहित 750 से अधिक पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर स्थानीय ग्राम पंचायत एवं ग्रामवासियों के सहयोग से नीम, आँवला, पीपल, बिल्व, शीशम, करंज आदि प्रजाति के पौधे रोपे गए। पौधारोपण का यह कार्यक्रम गायत्री परिवार के प्रांतीय सह समन्वयक बुरहानपुर निवासी श्री मनोज तिवारी के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

पौधारोपण पूरे आध्यात्मिक विधि-विधान के साथ किया गया। सभी पौधों को कलावा बाँधकर उनका पूजन किया गया। तत्पश्चात् तरुमिलन का भावभरा कर्मकांड हुआ। इसके बाद सभी ने मिलकर सामूहिक रूप से पौधारोपण किया। पर्यावरणविद् श्री मनोज तिवारी ने बताया कि नर्मदा एवं ताप्ती सहित मैदानी नदियों के ग्लेशियर ये हरे-भरे वृक्ष ही हैं। वृक्ष ही इन नदियों को सदा नीरा रखते हैं। आधुनिकता की दौड़ में पेड़ों को काटते चले जाना बड़ी मानवीय भूल है। वृक्ष नहीं रहेंगे तो प्रचण्ड जल संकट खड़ा हो जाएगा। श्री मनोज तिवारी ने वृक्षारोपण को आज का सबसे बड़ा युगधर्म बताया।

अध्यापक रामलाल पटेल ने कहा कि पेड़ लगाना एक धर्मशाला बनाने के बराबर पुण्यदायी है। ग्राम मर्दाना के सालिगराम चौधरी ने उपस्थित जन समुदाय से पौधों के संरक्षण हेतु बढ़ चढ़ कर अंशदान करने की बात कही।

तरुरोपण कार्यक्रम में ग्राम सरपंच श्री दिनेश लेवा सहित कई जनप्रतिनिधियों, गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्री धर्मेंद्र मुकाती ने किया।

हरीभरी हो गई 300 वीरान पहाड़ियाँ

श्री मनोहर यादव ने बताया कि आज तक गायत्री परिवार द्वारा संपूर्ण मध्य प्रदेश में 300 से अधिक वीरान पहाड़ियों को हरा-भरा किया जा चुका है। श्री जोगीलाल मुजाल्दे ने खरगोन जिले में 63,563 पेड़ लगाए जाने की जानकारी दी। अकेले कसरावद तहसील में 7,775 वृक्षों की पौध लगाई गई है।

ग्राम खामखेड़ा में वृक्षारोपण का महमोहक दृश्य

गायत्री परिवार ने आरंभ किया नगर को स्वच्छ बनाने का अभियान

अनेक धार्मिक, सामाजिक संगठनों और विद्यालयों से मिल रहा है शानदार सहयोग

प्रत्येक वॉर्ड में रैलियाँ

(1) दुकानदारों को अपने प्रतिष्ठानों के सामने डस्टबिन रखने हेतु निवेदन किया जा रहा है।
(2) गंदगी से फैलने वाली बीमारियों के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है।
(3) निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों से उनके कर्त्तव्यों का पालन करने का अनुरोध किया जा रहा है।

विशाल जनजागरण रैली से हुआ शुभारंभ

महापौर व अधिकारियों को ज्ञापन सौंपते परिजन

अलवर। राजस्थान

अलवर शहर में साफ-सफाई की बिगड़ती हुई स्थिति में सुधार के उद्देश्य से गायत्री परिवार अलवर ने अत्यंत प्रभावशाली पहल की है। नगर की सभी शाखाओं ने प्रत्येक वॉर्ड में स्वच्छता जन जागरण रैलियाँ निकालने का अभियान आरंभ किया है। रैली के साथ घर-घर संपर्क कर एक ओर नगरवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है, दूसरी ओर नगर पालिका से भी उसके दायित्वों का निष्ठापूर्वक पालन करने का अनुरोध किया जा रहा है।

अभियान का शुभारंभ दिनांक 4 सितम्बर 2024 बुधवार को शहर के कम्पनी बाग स्थित शहीद स्मारक से मुख्य मार्ग एवं मुख्य बाजार में होकर नगर निगम कार्यालय तक निकाली गई स्वच्छता जन जागरण रैली के साथ हुआ। मुख्य प्रबंध ट्रस्टी डॉ. सरोज गुप्ता ने महिला गायत्री परिजनों के समूह का तथा वरिष्ठ गायत्री परिजन श्री ओमप्रकाश शर्मा व श्री प्रदीप शर्मा ने पुरुष कार्यकर्त्ताओं का नेतृत्व किया। उन्होंने स्वयं माइक पर नारों की कमान सँभाली। दूसरे गायत्री परिजन हाथों में बैनर व नारों की तख्तियाँ लेकर नारे लगाते चल रहे थे।

रैली के निगम कार्यालय पहुँचने पर महापौर श्री घनश्याम गुर्जर तथा आयुक्त श्री बजरंग सिंह चौहान को ज्ञापन सौंपा गया। गायत्री परिवार ट्रस्ट अलवर की मुख्य प्रबंध ट्रस्टी डॉ. सरोज गुप्ता ने रैली संयोजक ज्ञानेंद्र शर्मा, ट्रस्ट के पूर्व मुख्य प्रबंध ट्रस्टी सतीश सारस्वत व राजेन्द्र सेठी, उपजोन प्रभारी दिनेश गुप्ता, ट्रस्टी बहिनें श्रीमती ज्ञान देवी शर्मा, ममता गुप्ता, प्रतिभा सिंह, शशि गुप्ता के साथ मिलकर महापौर को ज्ञापन सौंपा।

गायत्री परिवार की इस पहल को सभी आध्यात्मिक, सामाजिक संस्थानों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। आर्य समाज, इंडियन इंजीनियर लिमिटेड, अपना घर आश्रम, धार्मिक सेवा परिषद, स्वतंत्रता गौरव उत्सव समिति, परशुराम कला मंदिर, जिला युवा ब्राह्मण सभा, राजस्थान पेंशनर समाज, पतंजलि योगपीठ आदि के प्रतिनिधिमण्डल के अतिरिक्त वाईपीएसएम होम्योपैथिक कॉलेज एवं हॉस्पिटल के डॉक्टरों और छात्रों ने भी भाग लिया। कई विद्यालयों के शिक्षक-विद्यार्थियों ने नैतिक समर्थन ही नहीं दिया, बल्कि रैली में नारे लिखी पट्टियाँ लेकर रैली को प्रभावशाली बनाने में सक्रिय भूमिका भी निभाई। नगर निगम के कई वर्तमान एवं पूर्व पार्षदों ने भी रैली में सम्मिलित होकर अपना समर्थन दिया।

वॉर्ड क्रमांक 60 में निकाली रैली
वॉर्ड पार्षद से मिला सहयोग, किया सम्मान

गायत्री शक्तिपीठ अलवर के कार्यकर्त्ताओं ने 11 सितंबर को वॉर्ड क्रमांक 60 में रैली निकालकर प्रताप नगर, वीर सावरकर नगर क्षेत्र के नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। उन्हें कचरा नगर निगम की गाड़ी में डालने तथा पॉलीथीन का उपयोग न करने की विशेष प्रेरणा दी।

श्री अमित कुमार वशिष्ठ के अनुसार गायत्री परिवार के प्रयासों को **वॉर्ड पार्षद डॉक्टर अशोक पाठक का प्रशंसनीय सहयोग मिला। उन्होंने जेसीबी और कचरे की गाड़ी की सहायता से पूरे वॉर्ड का कचरा साफ कराया। गायत्री परिवार ने गायत्री मंत्र का दुपट्टा और युग साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया।**

वेस्ट से बेस्ट — प्रदूषण मिटा, शक्तिपीठ को होने लगी है आमदनी

अलवर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ अलवर अत्यंत पुराने वृक्ष पीपल, वट, नीम, आँवला आदि से सघनता से आच्छादित है। पतझड़ के दिनों में इन वृक्षों की पत्तियों का निस्तारण भी एक समस्या थी। उन्हें जलाने से प्रदूषण बढ़ता था। अब गायत्री परिवार ट्रस्ट करौली कुंड अलवर की मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी डॉ. सरोज गुप्ता के निर्देशन एवं जयपुर निवासी पर्यावरणविद डॉ. सुदीप्ति गुप्ता के मार्गदर्शन में इन पत्तों से कंपोस्ट खाद बनाना आरंभ कर दिया गया है। अब पत्तों के निस्तारण और पर्यावरण प्रदूषण की समस्या तो हल हो ही गई, शक्तिपीठ परिसर में लगे पौधों के लिए खाद मिलने लगी और बची हुई खाद से अतिरिक्त आय भी होने लगी है।

शान्तिकुञ्ज में आवश्यकता है
चार्टर्ड एकाउंटेंट और सहायक चार्टर्ड एकाउंटेंट की

मत्स्यावतार की तरह हो रहे गायत्री परिवार के विश्वव्यापी विस्तार के कारण इन दिनों शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में विधिक कार्य भी काफी बढ़ता जा रहा है। तद्नुसार इन दिनों शान्तिकुञ्ज में चार्टर्ड एकाउंटेंट और सहायक चार्टर्ड एकाउंटेंट की आवश्यकता है। यह योग्यता रखने वाले जो परिजन शान्तिकुञ्ज में रहकर लम्बे समय तक सेवाएँ देने के इच्छुक हों, वे कृपया अविलम्ब संपर्क करें।

अपने मिशन के समस्त कार्य समर्पित कार्यकर्त्ताओं द्वारा समयदान के रूप में ही किये जाते रहे हैं, तथापि यदि योग्यता और पारिवारिक आवश्यकता के अनुसार **मानदेय की अपेक्षा** हो तो उसका भी प्रावधान है। शान्तिकुञ्ज में आवास एवं अन्य आवश्यकता संबंधी विषयों की जानकारी ईमेल या फोन से प्राप्त की जा सकती है।

सेवा प्रदान करने के इच्छुक परिजन कृपया कार्यानुभव सहित अपना सम्पूर्ण विवरण ई-मेल : legalcell@awgp.org से हमें भेज दें।

संपर्क कीजिए : विधि प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।
मोबाइल नम्बर : 92583 60656

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी : एक ऐतिहासिक शासकीय आदेश

महानिदेशक, परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ ने प्रदेश के सभी जनपदों एवं विकासखण्डों में चिकित्सालयों एवं अन्य स्वास्थ्य संस्थानों को गर्भवती माताओं के प्रशिक्षण के लिए गायत्री परिवार के प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं की सेवा लेने के लिए निर्देश दिए

लखनऊ : महानिदेशक, परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ द्वारा दिनांक 8 अगस्त 2024 को पत्र संख्या- प०क०/08-प्रशि०/ विविध पत्रा०/ Vol-2/2024-25/ के माध्यम से उत्तर प्रदेश प्रांत के समस्त जनपदों के मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को विशेष निर्देश भेजा गया है। इसके अनुसार जनपद के समस्त महिला चिकित्सालयों, समस्त सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों को निर्देशित किया गया है कि उनके यहाँ होने वाली बैठकों/सम्मेलनों में गर्भवती माताओं और गर्भस्थ शिशुओं के स्वास्थ्य संबंधी वैज्ञानिक एवं विस्तृत जानकारी प्रदान करने के लिए गायत्री परिवार के प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं की सेवाएँ ली जाएँ, ताकि आने वाला शिशु विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुसार न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ हो, बल्कि वह मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक, समग्र रूप से स्वस्थ हो।

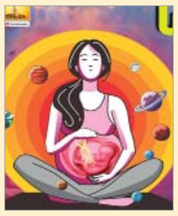

इस शासकीय निर्देश के अनुसार आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान में प्रशिक्षित गायत्री परिवार के क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता उपरोक्त स्वास्थ्य केन्द्रों में पहुँचकर अपने गर्भ संस्कार आन्दोलन के अन्तर्गत चिकित्सा अधिकारी, आशा बहिनों, स्वास्थ्य कर्मी, पर्यवेक्षक एवं गर्भवती माताओं को स्वस्थ जीवन शैली, आहार-विहार, योगासन, प्राणायाम, ध्यान, गर्भ संवाद एवं अन्य विषयों की विस्तृत वैज्ञानिक जानकारियाँ प्रदान करेंगे और प्रशिक्षण देंगे।

कार्यकर्त्ताओं में उत्साह, मुख्य चिकित्सा अधिकारियों ने की पहल

यह आदेश होते ही प्रांत के समस्त जनपदों के समन्वयक एवं सह-समन्वयक (आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी) अपने-अपने जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं स्वास्थ्य विभाग से संपर्क कर 'गर्भ संस्कार' आन्दोलन को गति देने के लिए उत्साहित हैं। लखनऊ, बरेली और महाराजगंज के मुख्य चिकित्सा अधिकारियों ने अपने अधीनस्थ चिकित्सालयों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, पीएचसी के प्रभारियों को निर्देश जारी भी कर दिए हैं कि वे अपने यहाँ होने वाली बैठकों/सम्मेलनों एवं प्रधानमंत्री योजना के अंतर्गत सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवसों में गायत्री परिवार के प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं के माध्यम से गर्भवती बहिनों के प्रशिक्षण की व्यवस्था बनाने में सहयोग प्रदान करें।

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैल जीजी जी के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में डॉ. गायत्री शर्मा, राष्ट्रीय समन्वयक, डॉ. संगीता सारस्वत, प्रांतीय समन्वयक उत्तर प्रदेश के साथ लखनऊ के कार्यकर्त्ता डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, श्रीमती सुमित्रा श्रीवास्तव एवं गायत्री परिवार के कई भाई-बहिनों ने इस विशिष्ट सफलता को प्राप्त करने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आशा है कि यह शासकीय आदेश गर्भ संस्कार अभियान को प्रचण्ड गति देते हुए परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को गाँव-गाँव में हर परिवार तक पहुँचाने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

उत्तर प्रदेश में जन्मशताब्दी वर्ष की हलचल

युवा संगठन द्वारा हर जिले में 'सुपर 50' का चयन

विकसित किए जायेंगे एक लाख युग निर्माणी युवा; इन्हें शान्तिकुञ्ज में विशेष प्रशिक्षण दिलाने की योजना है

गायत्री परिवार प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश द्वारा 24 एवं 25 अगस्त को वाराणसी और 31 अगस्त एवं 1 सितम्बर को सुल्तानपुर में अयोध्या जोन की जोनल युवा चिन्तन संगोष्ठी सम्पन्न हुई। वाराणसी में वाराणसी जोन के 20 जिले व सुल्तानपुर में अयोध्या जोन के 23 जिलों के सक्रिय युवा संगोष्ठी में सम्मिलित हुए। दोनों संगोष्ठियों में 43 जिलों के 450 कार्यकर्त्ताओं ने केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह की उपस्थिति में वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी को लेकर विचार मंथन किया।

प्रदेश में रचे गए कीर्तिमान

गोष्ठी में जनपद लखीमपुर में गुरु पूर्णिमा से अनवरत चल रहा वृक्षारोपण कार्य, लखनऊ के विद्यालयों में निरन्तर चल रही व्यक्तित्व परिष्कार कार्यशालाएँ, सुल्तानपुर में हुआ 5000 यूनिट रक्तदान तथा सुल्तानपुर शाखा द्वारा 1200 कन्याओं को शान्तिकुञ्ज में दिलाया गया प्रशिक्षण, दिया बस्ती के द्वारा चलाया जा रहा युवा जोड़ो अभियान, बाल सुधार गृह में चल रहे कार्यक्रम तथा वृक्षारोपण, नारी सशक्तीकरण कार्यक्रमों के साथ ऑनलाइन स्वाध्याय आदि कार्यक्रमों की सराहना की गई। इन जिलों ने उक्त कार्यों में शानदार कीर्तिमान स्थापित किया है।

सुल्तानपुर में अयोध्या जोन की संगोष्ठी

एक लाख युवा कार्यकर्ता विकसित होंगे

इस गोष्ठी में आगामी तीन माह में सभी जिलों में जिला स्तर पर 'सुपर 50' ग्रुप के गठन का लक्ष्य रखा गया है। इन चयनित युवाओं को शान्तिकुञ्ज में विशेष प्रशिक्षण दिलाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश ने जन्म शताब्दी वर्ष तक एक लाख युवाओं को मिशन के कार्यकर्त्ता के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है।

कन्या कौशल विकास का विराट अभियान

तीन दिवसीय शान्तिकुञ्ज प्रवास में हुए महत्त्वपूर्ण निर्धारण

खण्डवा (म.प्र.) में 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2024 की तिथियों में उपजोन स्तरीय विराट कन्या कौशल शिविर का आयोजन होने जा रहा है। यह आवासीय शिविर होगा, जिसमें परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी को ध्यान में रखते हुए प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर कन्या कौशल विकास के अभियान को गतिशील करने के लिए लगभग 5100 प्रतिभागी कन्याओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

शान्तिकुञ्ज से प्रेरणा ग्रहण करने और कार्ययोजना निर्धारित करने के लिए गायत्री परिवार खण्डवा का 40 सदस्यीय दल शान्तिकुञ्ज आया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें संबोधित करते हुए खण्डवा शाखा के कार्यकर्त्ताओं के उत्कृष्ट चिंतन और अथाह समर्पण की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह कन्याएँ युग गंगोत्री के संस्कार रूपी पावन गंगाजल को घर-घर पहुँचाकर समाज के नवनिर्माण में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने इस शिविर में स्वयं उपस्थित होकर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए सहमति प्रदान की।

इस शिविर को शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, मध्य जोन समन्वयक श्री जगदीश कुलमी, जोन समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा, मध्य प्रदेश जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल, उपजोन समन्वयक श्री पन्नालाल बिरला, खण्डवा के श्री देवेन्द्र सिंह यादव ने भी संबोधित किया।

24 सदस्यीय आयोजन समिति का गठन हुआ। डॉ. मधुसूदन गीते को संयोजक एवं सर्वश्री आनन्दीलाल सोनी, बृजेश पटेल एवं अजय लाड को सहसंयोजक बनाया गया। इस सम्मेलन में खण्डवा, खरगोन, बड़वानी और बुरहानपुर जिले की कन्याओं की भागीदारी होगी।

विराट आवासीय सम्मेलन की तैयारी

खण्डवा (मध्य प्रदेश) से चलाए जा रहे कन्या कौशल अभियान की विशेषता यह है कि प्रशिक्षित कन्याएँ ही अपने जीवन से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पूरे प्रदेश और देश के विभिन्न भागों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का संचालन कर रही हैं।

खण्डवा में कन्या कौशल विकास आन्दोलन को गति दे रहे प्रतिनिधि मंडल का शान्तिकुञ्ज प्रवास

अत्यंत आकर्षक और लोकप्रिय था दम्पति शिविर

'दो शरीर, एक प्राण' के ध्यान से भावविभोर हुए युगल

सम्मेलन में भाग ले रहे युगल ध्यान मुद्रा में

बलरामपुर जिले में चयनित 'सुपर 50' युवा दल के सदस्य

बलरामपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बलरामपुर पर 8 सितम्बर, रविवार को प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश के संयोजन में दंपति शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि कैलाश नारायण तिवारी, प्रभाकर सक्सेना और जय प्रकाश वर्मा ने दाम्पत्य जीवन की गरिमा और महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विवाह के समय ली गई प्रतिज्ञाओं के अनुरूप परिवार निर्माण के सूत्रों को भली भाँति समझा और निभाया जा सके, तो अपना घर ही नहीं, पूरा समाज सुख, शान्ति, समृद्धि और प्रगति की ओर अग्रसर होता जाएगा।

मंचासीन गणमान्यों ने उपस्थित सभी युगलों से विवाह के समय ली गई पति, पत्नी की अलग-अलग प्रतिज्ञाएँ दोहरवाईं। पति-पत्नियों ने परस्पर पुष्पहार पहनाकर दैनंदिन जीवन में आपस में प्रेम, सौजन्य और सहकार बनाए रखने का आश्वासन दिया।

पति-पत्नियों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर दो शरीर एक प्राण की अनुभूति का ध्यान भी किया। अनेक दम्पतियों ने अपने भाव व्यक्त करते हुए ध्यान के इस प्रयोग को अभूतपूर्व अनुभव बताया।

गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी के.के. तिवारी ने शक्तिपीठ पर प्रतिवर्ष एक बार इसी तरह के दम्पति शिविर का आयोजन किये जाने की घोषणा की।

'सुपर 50' टीम का चयन एवं सम्मान

बलरामपुर। उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश का प्रान्तीय युवा संगठन पूरे प्रदेश में नशा मुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, साधना, शिक्षा, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी आदि सभी रचनात्मक आन्दोलनों को अभीष्ट गति प्रदान करने के लिए हर जिले में युवाओं की 'सुपर 50' टीम का चयन कर रहा है। इसी क्रम में 8 सितंबर को गायत्री शक्तिपीठ बलरामपुर में जनपद स्तरीय युवा कार्यकर्ता गोष्ठी संपन्न हुई। इस गोष्ठी को प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री प्रभाकर सक्सेना, श्री जय प्रकाश वर्मा और श्री कैलाश नारायण तिवारी ने संबोधित किया।

जिले के सभी ब्लॉकों से चयनित सर्वाधिक सक्रिय 50 युवाओं को लेकर सुपर 50 युवा टीम का गठन किया गया। मीडिया प्रभारी श्री सुनील वर्मा ने बताया कि चयनित युवाओं का तिलक और पुष्प वर्षा के साथ सम्मान किया गया। उन्हें शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में विशेष प्रशिक्षण भी दिलाया जाएगा।

संगठन सशक्तीकरण प्रशिक्षण शिविर

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर पर दिनांक 3 सितम्बर 2024 को जिला स्तरीय संगठन सशक्तीकरण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें मातृशक्ति जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त होने वाले आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी गई और उनमें सक्रिय योगदान के संकल्प कराए गए। गायत्री प्रज्ञापीठ की संरक्षिका दुर्गा दीदी की विशेष उपस्थिति में इंदौर उज्जैन प्रभारी श्रीयुत श्रीकृष्ण शर्मा एवं श्री आर.के. गुप्ता ने मुख्य प्रशिक्षक की भूमिका निभाई।

श्रीयुत श्रीकृष्ण शर्मा ने कार्य में एकरूपता और संगठन सशक्तीकरण के लिए इस तरह के प्रशिक्षण में भागीदारी को सभी कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों के लिए अनिवार्य बताया। श्री आर.के. गुप्ता ने वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी तक दिन में कम से कम 4 घण्टे का योगदान समाज निर्माण के लिए देने का आह्वान किया।

जिले की सभी तहसीलों से आए कार्यकर्त्ता इस शिविर में उपस्थित थे। शानदार संकल्प उभरे। जिले की 286 पंचायतों में गायत्री साधक युग निर्माण का शंखनाद करेंगे। 19 बड़े स्तर के सामूहिक सम्मेलनों की रूपरेखा बनी। जिले में कार्यकर्ता प्रशिक्षण देने के लिए 17 टोलियाँ बनीं। यज्ञ कर्मकांड कराने वाली 7 टोलियाँ बनीं। 48 नए प्रज्ञा मंडल और 17 नए महिला मण्डलों का गठन हुआ।

देवास में सम्मेलन को संबोधित करते श्रीयुत श्रीकृष्ण शर्मा

मुजगहन में ढपली प्रशिक्षण लेती बहिनें

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार मुजगहन के श्री धनवंतरी नाग द्वारा अपने निवास स्थान पर ही कार्यकर्त्ताओं के लिए यज्ञ संचालन, विभिन्न संस्कार, दीपयज्ञ, गीत संगीत एवं ढफली वादन का दीर्घकालीन प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि एक माह से भी अधिक समय से चल रहे इस प्रशिक्षण शिविर में महिला मण्डल की बहिनों के साथ हाईस्कूल एवं कॉलेज की छात्राएँ भी बड़े उत्साह के साथ भाग ले रही हैं। श्रीमती तेजेश्वरी साहू, गायत्री नेताम, चित्रलेखा सिन्हा, मनीषा सेन, सरस्वती नाग, कु.टेमेश्वरी साहू, सविता साहू, राधिका साहू, मीनाक्षी पटेल, मनीषा साहू एवं चेतना साहू का इस प्रशिक्षण में सहयोग रहा।

गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के अंतर्गत नव प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा मुजगहन में 35 परिवारों में यज्ञ संपन्न कराया गया।

विद्यालयों में लगाए जा रहे हैं पुस्तक मेले

डिहरिया, पलामू। झारखंड

युवा मंडल डिहरिया ने विद्यालयों में युग निर्माणी पुस्तक मेले लगाने का अभियान आरंभ किया है। अभियान का शुभारंभ कन्या उच्च विद्यालय रेहला से हुआ। विद्यार्थियों को पहले से परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य की विशेषताओं की जानकारी दे दी गई थी, जिसके कारण सभी विद्यार्थियों में इस प्राणदायी साहित्य संजीवनी को देखने की उत्सुकता थी। विकास, पंकज, आनंद, योगेश इत्यादि युवाओं के प्रयासों से प्रथम प्रयास अत्यंत सफल और ऊर्जादायी सिद्ध हुआ।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री शंकरलाल परमार, शुजालपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार शुजालपुर के मुख्य ट्रस्टी श्री शंकरलाल परमार का देहांत हो गया। उनके व्यक्तित्व की सरलता, सहजता और मधुरता ने सभी को बहुत प्रभावित किया था। वे अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन भी पारिवारिक दायित्वों की तरह बड़ी सूझबूझ और निष्ठा के साथ किया करते थे।

श्री पंचदेव प्रसाद यादव तथा श्री धनेश्वर महतो बोकारो। झारखण्ड

गायत्री परिवार के सक्रिय सदस्य व गायत्री ज्ञान मंदिर कथारा के गोमिया व बोकारो के समन्वयक 50 वर्षीय श्री पंचदेव प्रसाद यादव तथा गायत्री परिवार नावाडीह निवासी 55 वर्षीय श्री धनेश्वर महतो का 2 सितंबर 2024 को एक सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया।

ऋषि संस्कृति के प्रति वनवासियों की आस्था

ऋषि पंचमी पर विराट संस्कार महोत्सव

हजारों वनवासियों ने यज्ञोपवीत बदले, गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली

ऋषि पंचमी के दिन सालीटांडा में श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न करते वनवासी भाई-बहिन

सालीटांडा, बड़वानी। मध्य प्रदेश

बडवानी जिले की राजपुर तहसील के ग्राम सालीटांडा में स्थित गायत्री शक्तिपीठ मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के लाखों वनवासियों का पवित्र तीर्थ है। परम पूज्य गुरुदेव के निषादराज कहे जाने वाले स्व. डेमनिया बाबा ने वहाँ के वनवासियों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने वाला श्रद्धा और संस्कारों का जो बीज बोया था, वह आज वटवृक्ष बनता जा रहा है। वहाँ हर वर्ष ऋषि पंचमी के दिन पूज्य गुरुदेव के विचारों और संस्कारों के प्रति गहन आस्था रखने वाले वनवासी हजारों भाई-बहिन दूर-दूर से आते हैं और श्रावणी पर्व की भाँति पूरे विधि-विधान के साथ यज्ञोपवीत परिवर्तन या धारण करते हैं।

इस वर्ष का ऋषि पंचमी महोत्सव शान्तिकुञ्ज से गई डॉ. अशोक ढोके और स्थानीय शक्तिपीठ की टोली की उपस्थिति में मनाया गया। इसमें खरगोन, धार, अलीराजपुर, झाबुआ, बड़वानी जिलों के हजारों आदिवासी भाई-बहिनों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर नशा, मांसाहार और कुरीतियाँ त्यागने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में उपस्थित गायत्री परिवार के मध्य प्रदेश जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल ने जन्मशताब्दी वर्ष की योजनाओं की जानकारी दी। जिला समन्वयक श्री महेंद्र भावसार ने जिले में चल रही गतिविधियों से जुड़ने का आह्वान किया। राजपुर के विधायक श्री बाला बच्चन ने डेमनिया बाबा से जुड़े अपने संस्मरणों को याद करते हुए उन्हें भावांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मंच पर ओंकारेश्वर उपजोन समन्वयक पन्नालाल बिरला, डॉ. सोहन लाल गुर्जर, रूपसिंग, महेंद्र भट्ट उपस्थित थे।

24 गाँवों में नशामुक्ति, कुरीति उन्मूलन अभियान

इस ऋषिपंचमी महोत्सव में सालीटांडा के आसपास के 24 गाँवों को पूरी तरह नशामुक्त करने का अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है। इसके अंतर्गत प्रत्येक रविवार को किसी एक गाँव में सामूहिक गायत्री महायज्ञ का आयोजन कर ऋषि संदेश दिया जाएगा। गाँव वासियों को तरह-तरह का नशा छोड़ने की प्रेरणा देने के अलावा बलि प्रथा बंद करने, विवाह में लेनदेन की प्रथा दूर करने, स्वच्छता रखने, वृक्षारोपण करने जैसी प्रेरणाएँ ग्रामवासियों को दी जाएँगी, संकल्प कराए जाएँगे। इन गाँवों में स्वास्थ्य शिविर लगाए जाएँगे।

एक सार्थक श्रद्धाञ्जलि संकल्प : मेरा गाँव, देव गाँव

गुन्नौर गाँव में निकाली व्यसनमुक्ति रैली

मुसाफिरखाना, अमेठी। उत्तर प्रदेश

3 सितम्बर को गायत्री शक्तिपीठ अमेठी के संस्थापक स्व. डॉ. सुरेंद्र प्रताप सिंह की 29वीं पुण्यतिथि संकल्प दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर उनकी जन्मभूमि मुसाफिरखाना के अंतर्गत गुन्नौर गाँव में नशामुक्ति रैली, वृक्षारोपण, गायत्री महायज्ञ, श्रद्धांजलि सभा एवं देव परिवार निर्माण संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रमों का शुभारंभ प्रातःकाल गुन्नौर गाँव में नशामुक्ति रैली के साथ हुआ। मुसाफिरखाना सर्कल के पुलिस उपाधीक्षक श्री अतुल कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इससे पूर्व उन्होंने रैली में भाग ले रहे छात्र एवं उपस्थित जन समुदाय को नशा न करने का संकल्प कराया। रैली पूरे गाँव का भ्रमण कर कार्यक्रम के आयोजक दीपक सिंह के घर पहुँचकर समाप्त हुई।

स्व. डॉ. सुरेंद्र प्रताप सिंह के सुपुत्र डॉ. प्रवीण सिंह 'दीपक' इन दिनों अमेठी में गायत्री परिवार के जिला युवा समन्वयक का कार्यभार सँभाल रहे हैं। उन्होंने अपने पिता के तप और कृतित्वों का स्मरण करते हुए कहा कि पूज्य पिताजी ने आजीवन लोगों को नशामुक्ति की प्रेरणा दी। आज उनकी स्मृति में पौधा लगाकर उनकी जन्मभूमि गुन्नौर में गायत्री परिवार के अभियान 'मेरा गाँव, देव गाँव' का आरंभ किया जा रहा है। यहाँ विभिन्न सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों को गति दी जाएगी।

पूरे गाँव में व्यसनमुक्ति का उद्घोष करते गाँववासी

जगमगा रही है समर्पण और आस्था की दिव्य ज्योति

एक ही टोली ने अब तक 270 घरों में कराए दीपयज्ञ

हर घर गंगाजल और देवस्थापना

10,000 से अधिक लोगों को दिया युग संदेश

जनमन में युग निर्माणी आस्थाओं का संचार करती श्री शिवराम शर्मा जी की टोली

नदबई, भरतपुर। राजस्थान

वाणी से कहीं अधिक प्रभाव व्यक्तित्व का होता है। यह तथ्य गायत्री शक्तिपीठ नदबई से जुड़े प्राणवान कार्यकर्त्ताओं की सक्रियता और उपलब्धियों में स्पष्ट दिखाई देता है। शक्तिपीठ से जुड़े कार्यकर्त्ताओं ने शक्तिपीठ के वार्षिकोत्सव (गायत्री जयंती 2024) से पूर्व 108 घरों में दीपयज्ञ कराने का संकल्प लिया था। यह क्रम वार्षिकोत्सव के बाद भी लगातार चलता रहा। वहाँ प्रायः प्रतिदिन किसी न किसी घर में दीपयज्ञ का आयोजन होता है। अब तक 270 से अधिक घरों में दीपयज्ञ सम्पन्न किये जा चुके हैं। प्रत्येक कार्यक्रम में मोहल्ले के 30 से 50 तक की संख्या में परिजन शामिल होते हैं। इस प्रकार इन छोटे-छोटे दीपयज्ञों के माध्यम से नगर के 10,000 से अधिक लोगों में युगशक्ति गायत्री और युगावतारी चेतना परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी के प्रति श्रद्धा-निष्ठा बढ़ाने एवं उन्हें आत्म परिष्कार एवं आत्म विकास की दिशा में प्रेरित करने में सफलता मिली है।

इन दीपयज्ञों के प्रभाव से घर-घर उपासना, साधना, स्वाध्याय, मंत्रलेखन, बलिवैश्व यज्ञ, जन्मदिन-विवाहदिन एवं अन्य संस्कारों का नियमित क्रम आरंभ किया जा सका है। घर-घर देवस्थापना व गंगाजल स्थापना हो रही है।

शक्तिपीठ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता इस दीपयज्ञ शृंखला की सफलता में सेवा निवृत्त शिक्षक श्री शिवराम शर्मा जी की मिशननिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता और मधुर व्यवहार का विशेष प्रभाव मानते हैं। श्री शिवराम जी शरीर से कृषकाय भले ही हों, लेकिन उनका संकल्प प्रचंड है, हौसला बुलंद है, जो सभी के लिए अनुकरणीय है। वे हर परिस्थिति में घर-घर जाकर अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना एवं प्रज्ञा अभियान पाक्षिक का वितरण कर रहे हैं। सदैव लोगों का उत्साह बढ़ाने वाले, सबके सुख-दुःख में सहयोग के लिए तत्पर रहने वाले इस प्राणवान कार्यकर्त्ता ने सभी का दिल जीता है। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीरा शर्मा तथा श्रीमती ओमवती पत्नी श्री जगदीश जी, श्रीमती लता, श्रीमती सुषमा, श्रीमती मिथलेश और श्री रमेश सोलंकी घर-घर जाकर दीपयज्ञ एवं विविध संस्कार सम्पन्न कराते हैं।

एक और टोली सक्रिय हुई

शक्तिपीठ के प्रतिनिधि श्री श्यामसिंह जी ने बताया कि इस दीपयज्ञ शृंखला से पूरे नगर में युग निर्माणी आस्थाओं का दिव्य वातावरण बन रहा है। क्षेत्र की माँग को देखते हुए अब श्रीमती संतोष बहिन जी की एक और टोली भी प्रतिदिन घर-घर दीपयज्ञ कराने लगी है। इस टोली में जल देवी जी, बड़ी कांता, कश्मीरा बहिन, कंचन बहिन, गायत्री बहिन और सरिता बहिन का नैष्ठिक योगदान है।

7 माह में 3000 लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया

धमतरी। छत्तीसगढ़

''नशा नाश की जड़ है।'' इस तथ्य से जन-जन को अवगत कराते हुए पूरे धमतरी जिले में 'नशा भारत छोड़ो' अभियान चलाया जा रहा है। गायत्री परिवार के परिजन गाँव और नगर के वॉर्ड में जनजागरूकता रैली निकालकर बड़ी संख्या में लोगों को नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प करा रहे हैं। विद्यालयों में नशामुक्ति के प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिला समन्वयक दिलीप नाग ने बताया कि धमतरी जिले में पिछले 7 माह में हुए यज्ञीय आयोजनों के अंतर्गत लगभग 3000 लोगों को नशा मुक्ति का संकल्प कराया गया है। जिला संगठन युवा प्रकोष्ठ के भागीरथी सोनकर, ब्लॉक समन्वयक कुरुद बंशीलाल यदु सहित जिले के सभी परिजन अभियान को सफल बनाने में उत्साहभरा योगदान कर रहे हैं।

57वाँ शिविर, 204 यूनिट रक्तदान हुआ

जमशेदपुर। झारखण्ड

सितम्बर के प्रथम सप्ताह में नवयुग दल एवं प्रज्ञा महिला मंडल जमशेदपुर का 57वाँ रक्तदान शिविर जमशेदपुर ब्लड बैंक के प्रांगण में संपन्न हुआ। इसमें कुल 204 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। समारोहपूर्वक सम्पन्न हुए इस शिविर में जिला विकास आयुक्त श्री मनीष कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने स्वयं भी रक्तदान किया। गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे सेवाकार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने स्वयं को बचपन से ही गायत्री परिवार का सदस्य बताया। उन्होंने कहा कि वे अपने बाल्यकाल में अपनी दादी के साथ गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में शामिल होते रहे हैं।

रक्तदान शिविर आरंभ करने से पूर्व प्रातःकाल गायत्री महायज्ञ किया गया। शिविर के समापन अवसर पर झारखण्ड में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रांतीय समन्वयक श्री ताराचंद्र अग्रवाल ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

दीप यज्ञ की दिव्यता से अभिभूत हुआ जनमानस

लखीसराय। बिहार

लखीसराय के धर्मरायचक में आयोजित नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का समापन भव्य एवं दिव्य दीप महायज्ञ के साथ हुआ। यह दीपयज्ञ सामूहिकता की शक्ति का अनुभव कराने वाला और अवांछनीयताओं से मुक्ति के लिए सामूहिक प्रयास करने की प्रेरणा देने वाला था। प्रज्वलित हजारों दीपों ने श्रद्धालुओं में भक्तिभाव का अद्भुत संचार किया। श्रद्धालुगण अपने-अपने घरों से दीपक लेकर आए थे। सैकड़ों लोगों द्वारा समवेत स्वर में दी गई गायत्री महामंत्र की आहुतियों से अंतःस्थल रोमांचित हो उठा।

यज्ञ पुरोहित श्री लाल बाबू ने कहा कि गायत्री उपासना से हर तरह की सुख-शांति प्राप्त होती है। गायत्री परिवार धर्मरायचक की ओर से श्री संतोष कुमार ने यज्ञ में विशेष योगदान देने वाली वॉर्ड पार्षद रेणु देवी एवं अन्य महानुभावों को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया।

समाजसेवी अर्जुन यादव ने जनवरी 2025 में 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ करवाने तथा प्रत्येक माह की पूर्णिमा के दिन ऐसा ही दीपयज्ञ कराने का प्रस्ताव रखा।

पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाने हेतु सम्मेलन

गायत्री तपोभूमि के पुनर्निर्माण में योगदान का भी आह्वान

बैंगलुरू। कर्नाटक

गायत्री चेतना केंद्र बैंगलुरु में गायत्री तपोभूमि मथुरा के प्रतिनिधियों द्वारा विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें मथुरा से आए प्रज्ञापुत्र सर्वश्री श्री अशोक पांडे, श्री अनिल श्रीवास्तव, श्री समर बहादुर एवं श्री अरुण साहू की टोली ने युग निर्माण योजना के विजन एवं मिशन की चर्चा की। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा तपोभूमि, मथुरा में स्थापित प्रथम गायत्री मंदिर के पुनर्निर्माण कार्यों से कार्यकर्त्ताओं को अवगत कराया।

श्रद्धेय श्री मृत्युंजय जी भाई साहब की ओर से सभी को तपोभूमि, मथुरा आने के लिए निमंत्रण दिया गया। मासिक अखंड ज्योति और युग निर्माण योजना पत्रिका को कर्नाटक के अधिक से अधिक घरों में पहुँचाने का आह्वान किया गया। उपस्थित कार्यकर्त्ताओं ने इन कार्यों के लिए उत्साहवर्धक संकल्प लिए।

सम्मेलन को संबोधित करते गायत्री तपोभूमि, मथुरा के प्रतिनिधि

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन गायत्री चेतना केंद्र के श्री अश्विन कटरे ने किया।

विदेशों में फैल रहा है युगशक्ति का दिव्य प्रकाश

गायत्री चेतना केन्द्र न्यू जर्सी में श्रावण माह के हर सोमवार को हुआ रुद्राभिषेक

विशिष्ट विधान और सेवाभाव से आकर्षित हुए श्रद्धालु
कामकाजी दिनों में भी हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही

पिस्काट वे, न्यू जर्सी। यू.एस.ए.

गायत्री चेतना केन्द्र पिस्काट वे में श्रावण मास के पाँचों सोमवार के दिन अथाह श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण रुद्राभिषेक के विशाल कार्यक्रम आयोजित हुए। कामकाजी दिन होने के बावजूद इस धार्मिक समारोह में स्थानीय एवं आसपास के राज्यों से आए 1100 श्रद्धालुओं का भाग लेना भारतीय संस्कृति के प्रति भारतीय लोगों की गहन भक्ति भावना का परिचय दे रहा था।

गायत्री परिवार ने अपनी उच्च कोटि की परिष्कृत, प्रामाणिक आध्यात्मिक मान्यताओं के साथ यह रुद्राभिषेक सम्पन्न कराया। श्रद्धालुओं को हर प्रकार की सुविधा प्रदान करने के लिए 80 स्वयंसेवक बड़े उत्साह के साथ सक्रिय रहे। पूजा-विधि का कोई शुल्क नहीं लिया गया, बल्कि पूजा के लिए आवश्यक बेलपत्र, केसर आदि तमाम सामग्री सौ प्रतिशत शुद्ध और निःशुल्क उपलब्ध कराई गई थी। सभी के लिए प्रसाद की व्यवस्था की गई थी। इन सब व्यवस्थाओं ने हिन्दू समुदाय को बहुत आकर्षित किया।

आयोजकों ने गणेशोत्सव, श्राद्ध, नवरात्र जैसे आने वाले त्यौहारों को भी इसी भक्तिभाव के साथ मनाए जाने की जानकारी दी।

कनाडा — संस्कार महोत्सव में 32 बच्चों ने दीक्षा ली

एडमॉण्टन। कनाडा

अखिल विश्व गायत्री परिवार की एडमॉण्टन शाखा ने 6 सितम्बर को वैदिक दीक्षा संस्कार एवं गायत्री यज्ञ का विशाल कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें लगभग 120 परिवारों ने भाग लिया। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय संस्कृति की विशेषताओं से अपने बच्चों को अवगत कराने तथा अपनी संस्कार परम्परा से जोड़ने के लिए परिजनों ने उन्हें कार्यक्रम में विशेष रूप से शामिल किया था। कार्यक्रम में 32 बच्चों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। समग्र कार्यक्रम अत्यंत सफल और उद्‌देश्यपूर्ण सिद्ध हुआ।

नॉर्वे — दीपयज्ञ में हुईं अभूतपूर्व दिव्य अनुभूतियाँ

ओस्लो। नॉर्वे

25 अगस्त 2024 के दिन ओस्लो में श्री अश्विन भाई और उनकी बेटी भुवी ने यज्ञ का आयोजन किया। इसमें नई और पुरानी दोनों पीढ़ी के लगभग 140 श्रद्धालुओं ने भाग लेते हुए नवयुग की स्थापना के लिए बताए गए परम पूज्य गुरुदेव के सूत्रों को बड़ी श्रद्धा के साथ सुना। वे परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताए गए दीप यज्ञ के दर्शन और उसमें निहित भावनाओं से मंत्रमुग्ध थे। उपस्थित श्रद्धालुओं ने ऐसी दिव्य ऊर्जा अनुभव की, जो पहले कभी नहीं की थी। महिला

ओस्लो में गायत्री परिवार द्वारा भव्य दीपयज्ञ का आयोजन

पुरोहितों द्वारा किए गए दीपयज्ञ के संचालन से भी श्रद्धालु बहुत प्रभावित हुए।

कार्यक्रम के बाद प्रसाद और लंगर की व्यवस्था थी। यज्ञ के प्रमुख आयोजक श्री मधुकर और अनुभा रोहतगी तथा अधीता ने कार्यक्रम की सफलता को सभी कार्यकर्त्ताओं के टीम वर्क का सत्परिणाम बताया।

सिंगापुर — गृहे-गृहे यज्ञ, उपासना अभियान का विस्तार

दिया, छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संयोजक डॉ. पी.एल. साव ने अपने सिंगापुर प्रवास में वहाँ के सनकँग शहर में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया। दिनांक 1 सितंबर 2024 को यह यज्ञ श्री बालेश्वर सिंह केशरी के घर हुआ। श्रीमती सुषमा केशरी, शाइनी, प्रीतिका, आयुषी एवं प्रखर साहू ने यज्ञ में भाग लिया। श्रीमती अनीता साव ने जीवन में गायत्री उपासना और यज्ञ के प्रभाव की

जानकारी देते हुए सभी याजकों को नियमित स्वाध्याय एवं गायत्री उपासना की प्रेरणा दी, संकल्प दिलाया। डॉ. साव ने बताया कि यह सिंगापुर में गृहे-गृहे यज्ञ अभियान चलाने की प्रेरणा देने का प्रयास था।

शिक्षक दिवस पर कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का संदेश

जिनका जीवन उत्कृष्टता की ओर बढ़ने की प्रेरणा दे, वही है सच्चा शिक्षक

हमारे हर कार्यकर्त्ता को समाज के समक्ष अपने जीवन का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

अपना जीवन शिक्षा के विस्तार के लिए समर्पित करने वाले भारतरत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जन्म जयंती देव संस्कृति विश्वविद्यालय और गायत्री विद्यापीठ में उत्साहपूर्वक मनाई गई। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी 5 सितम्बर को मनाए गए शिक्षक दिवस समारोह से वर्चुअल जुड़े। उन्होंने डॉ. राधाकृष्णन जी के साथ युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, महात्मा बुद्ध, डॉ. अब्दुल कलाम जैसे व्यक्तित्वों का स्मरण करते हुए उन्हें आदर्श शिक्षक बताया। उन्होंने कहा कि जो लोगों को अपने जीवन से कुछ बनने और सीखने की प्रेरणा देते हैं, वे सच्चे शिक्षक हैं, चाहे वे शिक्षा तंत्र से जुड़े हों अथवा किसी अन्य पेशे से।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के भाग्य विधाता होते हैं। महान व्यक्तित्व सम्पन्न आदर्श शिक्षकों ने सारी दुनिया को जीने की राह दिखाई है। डॉ. साहब ने मिशन से जुड़े हर कार्यकर्त्ता को जीवन में नैतिकता और राष्ट्र के प्रति निष्ठा का विकास करते हुए आदर्श शिक्षक की भूमिका निभाने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारतरत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पण के साथ हुआ। तत्पश्चात प्रज्ञागीत, समूह भावनृत्य, लघु नाटक के माध्यम से गुरु-शिष्य परंपरा और शिक्षा-विद्या का मार्मिक चित्रण किया गया। समापन अवसर पर देसंविवि के कुलपति, प्रति कुलपति, कुलसचिव एवं संकायाध्यक्ष ने विश्वविद्यालय में सेवारत सभी शिक्षकों, अधिकारियों एवं गैर शैक्षणिक स्टाफ को उपहार भेंट किये।

गायत्री विद्यापीठ में

देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्थित गायत्री विद्यापीठ में भी पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन जी की जयंती मनाते हुए नौनिहालों ने विविध रंगारंग कार्यक्रमों के माध्यम

माननीय प्रति कुलपति जी द्वारा शिक्षक दिवस पर गुरुजनों व विद्यार्थियों का सम्मान तथा विद्यार्थियों द्वारा आदर्श गुरुजनों के व्यक्तित्व का मंचन

से उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को दर्शाया। गायत्री विद्यापीठ की व्यवस्था मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने बच्चों को डॉ. राधाकृष्णन के जीवन से सीखने तथा नियमित रूप से पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने बच्चों को ज्ञान, सूझबूझ और उत्कृष्ट चिंतन के साथ निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा दी।

गा.वि.पीठ में दीप प्रज्वलन करतीं श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और इंडोनेशिया के शैक्षणिक संस्थान के बीच एमओयू

दिनांक 10 सितंबर को जीवन विद्या के आलोक केन्द्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय और इंडोनेशिया स्थित इंस्टीट्यूट अगामा हिंदू नेगेरी गेड पुडजा मातारम के बीच एक शैक्षिक अनुबंध (एम.ओ.यू.) हुआ। देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं आईएएचएन गेड पुडजा मातारम के रेक्टर प्रो. डॉ. मुर्बाविदाउरा ने अनुबंध के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर इंडोनेशिया से आये प्रो. डॉ. इर. आई वायन विराता ए.मा. और डॉ. अगुस इंद्र उदयाना (इंडोनेशिया) विशेष रूप से उपस्थित थे।

यह अनुबंध परस्पर शैक्षणिक, शोध, सामुदायिक सेवा और सांस्कृतिक गतिविधियों के आदान-प्रदान के क्षेत्र में हुआ है। अनुबंध के अंतर्गत संयुक्त शोधकार्य, संयुक्त लेख, पुस्तक प्रकाशन और लेखन, विजिटिंग

डॉ. मुर्बाविदाउरा एवं साथ आए अधिकारीगण माननीय प्रति कुलपति, देसंविवि के साथ दस्तावेजों का हस्तांतरण करते हुए

प्रोफेसर्स का आदान-प्रदान और छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजना, सेमीनार, संगोष्ठी, शैक्षिक कार्यक्रम, कला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन आदि किया जाना है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में 40 दिवसीय अनुष्ठान

22 नवंबर से 31 दिसंबर, 2024 तक व
04 जनवरी से 12 फरवरी, 2025 तक

(कार्यक्रम प्रात:काल से ही प्रारंभ होंगे, अतः एक दिन पूर्व पधारें)

गायत्री तपोभूमि मथुरा, तप की दिव्य भूमि है। यहाँ की शांति, प्रखरता, श्रद्धा, प्रेरणा, सृजन-ऊर्जा का उल्लास हर किसी को जप-तप, अनुष्ठान आदि के लिए आमंत्रित करता है। परिजनों की इन इच्छा-आकांक्षाओं को देखते हुए गायत्री तपोभूमि, मथुरा में उपरोक्त तिथियों में 40 दिवसीय साधना शिविर (सवा लाख जप का अनुष्ठान) के दो सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में कर्मकांड एवं ढपली का प्रशिक्षण भी होगा।

शिविर में भागीदार बनने के इच्छुक परिजन आवेदन करके शीघ्र स्वीकृति प्राप्त कर लें। कृपया बिना स्वीकृति के न आएँ।

विशेष अनुरोध : अति वृद्ध, बीमार तथा अनुशासनों का पालन करने में असमर्थ परिजन न आएँ। मथुरा में उन दिनों ठंड अधिक पड़ती है, अतः गरम वस्त्र भी लाएँ।

संपर्क सूत्र : युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-2810003 फोन नं०-(0565) 2530115, 2530128, 2530399
मो.-9927086287, 9927086289 E-Mail ID : yugnirman@yugnirmanyojna.org

सेना की इको बटालियन और गायत्री परिवार का संयुक्त वृक्षारोपण अभियान

हिंगोली। महाराष्ट्र : महाराष्ट्र में भारतीय सेना की इकाई मराठवाड़ा इको टास्क फोर्स हर वर्ष गायत्री परिवार के सहयोग से 'मेगा ट्री प्लांटेशन ड्राइव' का आयोजन करती है। इसके अंतर्गत कई हजार वृक्षों की पौध लगाकर वीरान क्षेत्र को हराभरा बनाने का स्तुत्य कार्य सम्पन्न हो रहा है।

इस वर्ष दिनांक 1 सितंबर 2024 को हिंगोली जिले में इस मेगा ट्री प्लांटेशन ड्राइव का आयोजन हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और कर्नल श्री निर्देश साह, कर्नल मोहन सिंह नेगी के मुख्य आतिथ्य में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने प्रकृति के पोषण के प्रयासों की सराहना करते हुए इसे भारत के भविष्य को बनाने वाला संकल्प बताया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि यह मात्र वृक्षारोपण का कार्यक्रम नहीं है, यह मानवता के अस्तित्व के साथ जुड़ा हुआ महायज्ञ है। हमारी आज की सारी समस्याओं का समाधान एक ही है कि हम प्रकृति का पोषण करें।

इस विराट वृक्षारोपण अभियान में भाग लेने हिंगोली और संभाजी नगर जिले के अलावा विदर्भ क्षेत्र से हजारों की संख्या में गायत्री परिवार के परिजन आए थे।

पाँच 'माँ' के नाम लगाएँ पेड़

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने प्रत्येक कार्यकर्त्ता से पाँच माँ के नाम पेड़ लगाने का आह्वान किया, पहला पेड़ अपनी माँ के नाम, दूसरा पेड़ धरती माँ के नाम, तीसरा गंगा माँ के नाम, चौथा प्रकृति माँ के नाम और पाँचवा जन्मभूमि के रूप में स्थानीय नगरी रूपी माँ के नाम।

कर्नल श्री निर्देश साह को देवस्थापना चित्र भेंट करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं वृक्षारोपण अभियान में भाग ले रहे गायत्री परिवार के परिजन तथा सेना के जवान

व्यक्ति के पास उद्देश्य हो तो जीवन उत्सव में बदल जाता है : डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

रुद्रपुर। उत्तराखण्ड

''व्यक्ति के पास उद्देश्य हो तो जीवन उत्सव में बदल जाता है।'' गायत्री परिवार के यूथ आइकॉन एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रति कुलपति आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने रुद्रपुर के जेसीएस पब्लिक स्कूल, गंगापुर के प्रेक्षागृह में आयोजित कुमाऊँ मण्डल की संगोष्ठी को संबोधित करते हुए यह विचार व्यक्त किये।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 'जिंदगी आशीर्वाद या अभिशाप' विषय पर बोलते हुए कहा कि जीवन विविध संभावनाओं से युक्त है। कंस बनने की संभावना है, तो कृष्ण बनने की भी संभावना है। रावण बनने की संभावना है, तो राम बनने की भी संभावना है। संभावनाओं का लाभ कौन और कैसे उठाता है, यह अहम है।

31 अगस्त को आयोजित इस गोष्ठी में अल्मोड़ा, नैनीताल, चंपावत, रायपुर, उधमसिंह नगर की सभी तहसील काशीपुर, बाजपुर, गदरपुर, पंतनगर, हल्द्वानी, बनबासा, सितारगंज, खटीमा आदि के हजारों युवा उपस्थित थे।

उत्तराखण्ड की गरिमा के अनुरूप जीवन जियें

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि उत्तराखण्ड देवभूमि है और हमें इस भूमि की गरिमा के अनुरूप अपना जीवन विकसित करना चाहिए। हमें ऐसे प्रयास करने होंगे, जिससे समस्त समाज मिलकर रहे, सभी एक-दूसरे के सृजनात्मक कार्यों में सहयोग करें। उन्होंने सभी को नशामुक्ति, पर्यावरण के प्रति जागरूकता, वृक्षारोपण, जलसंरक्षण, बाल संस्कार शाला जैसे रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भागीदारी की प्रेरणाएँ दीं।

शक्तिपीठ में उत्साहित ऊर्जावान कार्यकर्त्ताओं के संग

विशिष्ट ज्ञातव्य

- युवाशक्ति को जन्मशताब्दी 2026 के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भागीदारी करने का संकल्प दिलाया।
- रुद्रपुर के कार्यकर्त्ताओं की बड़ी उपलब्धि यह रही कि उनके प्रयासों से जिले के सभी सरकारी स्कूलों की प्रार्थना सभा में गायत्री परिवार द्वारा तैयार बुकलेट के आधार पर बच्चों को नैतिक शिक्षाएँ दी जाती हैं।
- संगोष्ठी के समापन अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने समाजसेवा में लगे सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया।

डॉ. पण्ड्या जी का भव्य स्वागत, सत्कार

रुद्रपुर पहुँचने पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का भव्य स्वागत हुआ। सर्वप्रथम उन्होंने गायत्री चेतना केन्द्र गंगापुर पहुँचने पर माँ गायत्री और अपनी मार्गदर्शक गुरुसत्ता की आरती की। समारोह के मंच पर गायत्री चेतना केंद्र गंगापुर के अध्यक्ष श्री अशोक कुमार छाबड़ा के नेतृत्व में आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी का भव्य स्वागत किया गया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी रुद्रपुर में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए

सनातन संस्कृति की आत्मा कभी नष्ट नहीं हो सकती

गीता ज्ञान संस्थानम् में आयोजित धर्म सभा में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का उद्बोधन

कुरुक्षेत्र। हरियाणा

''गीता का शाश्वत संदेश और भगवान श्रीकृष्ण का पाँचजन्य शंख भारत के नवजागरण का आह्वान कर रहा है। आज भारत जाग रहा है, न सिर्फ जाग रहा है, बल्कि दहाड़ रहा है।

चिरकाल से अध्यात्म ने भारत की भूमि को अपना स्थाई निवास बनाया है, जिसके बिना इंसान इंसान न बन पाया होता। भारत की इस सनातन संस्कृति की आत्मा को न तो काटा जा सकता है, न जलाया या बहाया जा सकता है और ना ही नष्ट किया जा सकता है।''

यह उद्गार हैं अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के। वे विश्व को गीता का संदेश देने वाली दिव्य भूमि कुरुक्षेत्र में आयोजित गीता ज्ञान संस्थानम् के वेलनेस सेंटर के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे।

शिक्षक दिवस-5 सितंबर 2024 के दिन यह लोकार्पण समारोह गीता ज्ञान संस्थानम् के अध्यक्ष स्वामी ज्ञानानंद जी एवं मेदांता हॉस्पिटल के चेयरमैन डॉक्टर नरेश त्रेहन जी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया था। समारोह को मंचासीन अनेक विशिष्ट गणमान्यों ने संबोधित किया। उन्होंने गीता के अमर संदेशों पर अपने विचार रखे। सभी ने गीता के दिव्य संदेश को जीवन-व्यवहार में उतारने पर बल दिया।

शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधित्व करते हुए सभा को संबोधित करते डॉ. चिन्मय जी

उपस्थित रहे अति विशिष्ट गणमान्य

इस भव्य आध्यात्मिक समारोह में अति विशिष्ट गणमान्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय हौसबोले जी, केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी, योगगुरु स्वामी रामदेव जी, स्वामी परमात्मानंद जी एवं स्वामी ज्ञानानंद जी उपस्थित थे। सभी के संदेशों ने गीता-संदेश की मार्मिक व्याख्याएँ कीं।

शक्तिपीठ के दर्शन किये

कुरुक्षेत्र पहुँचने पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने सबसे पहले गायत्री शक्तिपीठ, कुरुक्षेत्र पहुँच कर परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के चित्रों के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् सभी आत्मीय परिजनों से भेंट कर उनकी कुशलक्षेम जानी।

क्षेत्र में प्रथम बार आगमन से उत्साहित हुए कार्यकर्त्ता

पीतल नगरी में प्रथम आगमन पर भव्य स्वागत, गायत्री चेतना केन्द्र मुरादाबाद में चल रही अपनों से अपनी बात

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

31 अगस्त की दोपहर को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी मुरादाबाद जिले के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की कुशलक्षेम जानने के लिए गायत्री चेतना केन्द्र मुरादाबाद पहुँचे। अपने क्षेत्र में पहली बार उनके आने से पूरे जिले के कार्यकर्त्ताओं में गजब का उत्साह था। यद्यपि उनका यहाँ अत्यंत संक्षिप्त कार्यक्रम था, तथापि पूरे जिले से आए लगभग 300 कार्यकर्त्ताओं के उत्साह को देखते हुए उन्होंने एक घंटे का अतिरिक्त समय दिया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के पहुँचने पर बहिनों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। केन्द्र व्यवस्थापक श्री एल.के. त्यागी और समस्त वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने पुष्पहार के साथ उनका अभिनन्दन किया। डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री माता और गुरुदेव-माताजी की आरती करने के पश्चात् कार्यकर्त्ताओं से परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष की योजनाओं को अधिक से अधिक सफल बनाने के लिए पूरे उत्साह के साथ जुट जाने का आह्वान किया।

'अस्मिता खेलो इंडिया योगासन'

दे.सं. विश्वविद्यालय का उत्कृष्ट प्रदर्शन

भारत एवं उत्तर प्रदेश योगासन स्पोर्ट एसोसिएशन के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 3 सितंबर की तिथियों में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में अस्मिता खेलो इंडिया योगासन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें नॉर्थ जोन के अंतर्गत 18 वर्ष के ऊपर वर्ग में देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग कर विश्वविद्यालय का परचम लहराया। आर्टिस्टिक पेयर वर्ग में तनिष्का एवं अकुला ज्योतिका ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पदक और नगद पुरस्कार जीते। आर्टिस्टिक ग्रुप में देसंविवि की ज्योति कुमारी, रिद्धि लखेरा, अंशिका पटेल, तनिष्का एवं अकुला ज्योतिका ने भी कई पदक जीते।

देसंविवि लौटने पर प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने सभी का अभिनन्दन किया, आशीर्वाद दिया, प्रतिभागी विद्यार्थी और प्रशिक्षकों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अखण्ड ज्योति के प्राकट्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी की जन्मशताब्दी के निमित्त आरंभ हो रही हैं राष्ट्रव्यापी ज्योति कलश यात्राएँ

श्रद्धेया शैल जीजी रथ के लिए शक्ति कलश देते हुए

ऋषियुग्म के स्मारकों पर पहुँचे शक्ति कलश

उद्घाटन सत्र में लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला जी द्वारा शक्ति कलश पूजन

बसंत पंचमी सन् 1926 में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा अखण्ड ज्योति प्राकट्य और शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के धरा पर अवतरण की दो ऐतिहासिक घटनाएँ घटीं। दोनों का उद्देश्य आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण के साथ समाज में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का विस्तार और उसके द्वारा 'मानव में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का, नवयुग का अवतरण' रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने विगत कई दशकों से इस संकल्प की सिद्धि हेतु अथाह कार्य किया है, तरह-तरह के अभियान चलाए हैं।

वर्ष 2026 अखण्ड ज्योति के प्राकट्य और परम वंदनीया माताजी के जन्म का शताब्दी वर्ष है। इसे देखते हुए युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में अखण्ड ज्योति को प्रचण्ड ज्योति में परिवर्तित करने का संकल्प उभरा है, जिसके प्रकाश में जन-जन के मन में सनातन संस्कृति के उदात्त आदर्शों के प्रति आस्था बढ़े, समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास, भेदभाव, अराजकता, अवांछनीयताओं का कुहासा छटे और पूरे देश में समरसता, सद्भावना का वातावरण बने, ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं।

आगामी दिनों पूरे देश में 'ज्योति कलश यात्राएँ' निकाली जा रही हैं। यह यात्राएँ सीधे शान्तिकुञ्ज के नेतृत्व और मार्गदर्शन में संचालित होंगी। शान्तिकुञ्ज में इन दिनों ज्योति कलश यात्राओं हेतु क्षेत्रवार विशेष कार्यशालाएँ आयोजित हो रही हैं। इनमें जोन, उपजोन, जिला और तहसील स्तरीय कार्यकर्त्ता भाग ले रहे हैं। ज्योति कलश यात्राओं के उद्देश्य और समग्र योजना की रूपरेखा स्पष्ट करना, यात्राओं के मार्ग का निर्धारण तथा उनके संचालन की विधि-व्यवस्था सुनिश्चित करना इन कार्यशालाओं का मुख्य प्रयोजन है।

ज्योति कलशों का हस्तांतरण

शान्तिकुञ्ज में आयोजित कार्यशालाओं में श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब शक्ति कलशों में शक्ति संचार हेतु विशेष पूजन करने के पश्चात् उन्हें रथों में स्थापित करने के लिए संबंधित क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं को सौंप रहे हैं। इस विशिष्ट पूजन के साथ कार्यकर्त्ताओं को युगतीर्थ के ऊर्जा अनुदान भी प्राप्त हो रहे हैं।

लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला जी ने किया प्रथम ज्योति कलश यात्रा कार्यशाला का उद्घाटन किया

शान्तिकुञ्ज में दिनांक 7, 8 एवं 9 सितम्बर को प्रथम कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें राजस्थान, प. बंगाल तथा पूर्वोत्तर भारत के लिए ज्योति कलश यात्राओं के संचालन की योजना बनाई गई। राजस्थान के लगभग 1000 कार्यकर्त्ता तथा प. बंगाल, असम, अरुणाचल आदि पूर्वोत्तर भारत के प्रान्तों से आए लगभग 300 कार्यकर्त्ता इस कार्यशाला में उपस्थित थे। श्रद्धेया शैल जीजी ने राजस्थान के लिए 7 और बंगाल, पूर्वोत्तर भारत के लिए एक-एक शक्ति कलश का पूजन कर उन्हें समारोहपूर्वक कार्यकर्त्ताओं को सौंपा।

तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित ज्योति कलश यात्रा सम्मेलन के साथ हुआ। लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने गायत्री परिवार के कार्यक्रमों की मुक्त कंठ से सराहना की। उन्होंने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं से ज्योति से ज्योति जलाने तथा देश और दुनिया को जगमगाने का संकल्प लेकर ज्योति कलश यात्राओं को निकालने का आह्वान किया।

इससे पूर्व देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने ज्योति कलश यात्राओं के उद्देश्य और योजना को स्पष्ट करते हुए कहा कि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा जलाई गई ज्योति का अंश लेकर यह ज्योति कलश यात्राएँ जहाँ जायेंगी, वहाँ लोगों को भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत कर उनकी चेतना को प्रखर बनाने का कार्य करेंगी।

इस अवसर पर श्री विनय रूहेला, उपाध्यक्ष राज्य आपदा प्रबंधन विभाग, कुलपति श्री शरद पारधी, डॉ. ओ.पी. शर्मा, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, प्रशासनिक अधिकारी सहित सम्मेलन में भाग लेने आए सभी कार्यकर्त्तागण उपस्थित थे। सभी गणमान्यों ने शक्ति कलशों की पूजा एवं उन पर पुष्पवर्षा की।

माननीय श्री बिरला जी के देसंविवि पहुँचने पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने राजस्थानी साफा बाँधकर एवं पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका स्वागत किया। माननीय लोकसभा अध्यक्ष ने विवि. परिसर में स्थित एशिया के प्रथम बाल्टिक केंद्र, स्वावलंबन केन्द्र सहित विविध प्रकल्पों का अवलोकन किया, शौर्य की दीवार पर पुष्पांजलि अर्पित कर उत्तराखण्ड के शहीदों को नमन किया।

कार्यशाला के समापन पर शक्तिकलशों का शान्तिकुञ्ज में भ्रमण

- गायत्री विद्यापीठ शिक्षण समिति की प्रमुख आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी ने ज्योति कलश यात्रा की सफलता में बहिनों की विशिष्ट भूमिका पर प्रकाश डाला।
- शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने कहा कि अखण्ड ज्योति में गुरुदेव-माताजी कारण रूप में विद्यमान हैं। हमें उन्हें गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचाना है।

एक अभूतपूर्व अवसर - श्रद्धेया शैल जीजी

ज्योति कलश यात्रा एक अभूतपूर्व अवसर है। इस अभियान को ऋषिसत्ताओं एवं हमारे आराध्य युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा जी का सूक्ष्म संरक्षण प्राप्त है। यह यात्रा अपने उद्देश्यों को अवश्य पूरा करेगी, हमें पूरे समर्पण भाव के साथ अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करना है।

- श्रद्धेया शैलदीदी

यज्ञभाव का संचार किया - श्री बिरला जी

आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन के भीषण दौर से गुजर रही है, क्योंकि हमने यज्ञ करना छोड़ दिया, लेकिन गायत्री परिवार यज्ञ की परंपरा को जन-जन तक पहुँचा रहा है।

- माननीय श्री ओम बिरला जी, लोकसभा अध्यक्ष

हमारा उद्देश्य भावनात्मक नवनिर्माण

ज्योति कलश यात्रा का उद्देश्य लोगों का भावनात्मक नवनिर्माण करना है। इस ज्योति से ऐसे प्रकाशवान व्यक्तित्व निखरकर सामने आयेंगे, जो समाज एवं दुनिया में फैले अंधकार को दूर करने में सक्षम होंगे।

-आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति देसंविवि

राजस्थान प्रान्त की विधि-व्यवस्था और भावी कार्यक्रम

राजस्थान के सभी 50 जिलों में कुल 7 ज्योति कलश रथ यात्राएँ निकलेंगी, जो गाँव-गाँव, घर-घर, ढाणी-ढाणी तक पहुँचेंगी। इनका संचालन राजस्थान के 13 उपजोनों के माध्यम से होगा। इन दिनों सातों यात्राओं के लिए जयपुर में महिन्द्रा मैक्स पिकअप गाड़ियों को रथ के आकार में तैयार किया, सजाया जा रहा है, जिन पर शक्ति कलश प्रतिष्ठित किए जायेंगे।

सभी जोनों में रथों के संचालन के लिए कार्यकारिणी का निर्धारण किया गया है। कार्यकारिणी के सदस्यों को उनके उत्तरदायित्व सौंप दिये गए हैं। ये कार्यकारिणी रथ संचालन की योजना, पूर्व व्यवस्था, प्रचार-प्रसार के साथ शान्तिकुञ्ज और जोन, उपजोन मुख्यालयों को नियमित रूप से प्रगति विवरण भी प्रदान करेंगी। इन दिनों सातों रथ यात्राओं के आरंभिक क्षेत्रों में घर-घर पहुँचकर लोगों को पीले चावल देते हुए ज्योति कलश यात्राओं के स्वागत समारोहों में आमंत्रित करने का अभियान आरंभ हो गया है।

पुष्कर पहुँचे शक्ति कलश

शान्तिकुञ्ज से राजस्थान की सभी 7 ज्योति कलश रथ यात्राओं के लिए श्रद्धेया शैल जीजी द्वारा दिये गए शक्ति कलश वर्तमान में जोन मुख्यालय तीर्थराज पुष्कर में प्रतिष्ठित हैं, उनके समक्ष अखण्ड जप चल रहा है।

6 नवम्बर से होगा शुभारंभ

ज्योति कलश यात्राएँ दीपावली के बाद आरंभ होंगी। सातों ज्योति कलश रथ यात्राएँ अलग-अलग उपजोनों में एक साथ संचालित होंगी। 5 नवम्बर को तीर्थराज पुष्कर की परिक्रमा करते हुए सभी शक्तिकलश जयपुर लाये जायेंगे। 6 नवम्बर को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा वर्चुअल पूजन और संदेश के साथ सभी रथों को अपने-अपने क्षेत्रों के लिए रवाना किया जाएगा।

ऋषियुग्म के पावन स्मारकों के दर्शन और श्रद्धेय द्वय से भेंट

माननीय श्री ओम बिरला जी श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट करने शान्तिकुञ्ज आए, उनके साथ सामाजिक उत्थान के अनेक विषयों पर चर्चा हुई। श्रद्धेयद्वय ने उनका मंगल तिलक किया, उन्हें गायत्री महामंत्र का उपवस्त्र ओढ़ाकर एवं युगसाहित्य, भेंटकर सम्मानित किया।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष ने विश्व मानवता को आलोकित करने वाले ऋषियुग्म की प्रखर प्राण चेतना 'अखण्ड ज्योति' के दर्शन किए, विश्व कल्याण की प्रार्थना की। वे परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के पावन स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा' पर पुष्पांजलि अर्पित करने भी गए।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 27.09.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26